गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

प्रो० (श्रीमती) शोभा गौड़*
ऋषिकेष विश्वकर्मा **

प्रस्तावना–

शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। उसके व्यवहार तथा विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिवर्धन तथा परिमार्जन होता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने में उपयोगी साधन है। शिक्षा के अनेक स्तर हैं– प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा। किन्तु विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक शिक्षा का स्तर सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षा की पहली सीढ़ी है जिससे सफलता पूर्वक पार करके ही कोई व्यक्ति अपने अभिष्ट लक्ष्यों तक पहुँच सकता है।

प्राथमिक शिक्षा के सर्व सुलभीकरण और 'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्य की पूर्ति के लिए देश के सभी जिलों में राष्ट्रीय योजना के रूप में 'सर्व शिक्षा अभियान' 2 जनवरी 2001 को प्रारम्भ किया गया। 86वें संविधान संशोधन अधिनियम 2002 के अनुसार अनुच्छेद 21(क) के माध्यम से शिक्षा को संविधान के भाग–3, अध्याय–11 के अन्तर्गत शिक्षा को 'मूल अधिकार' का दर्जा प्रदान किया गया। जिससे 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के सभी बालकों को शिक्षा का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है। संविधान के अनुच्छेद 45 में एक अनुच्छेद 45(A) जोड़कर देश के 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था किया गया है।

1.1 शोध की आवश्यकता –

अध्यापक के व्यक्तित्व का बहुत कुछ प्रभाव बालकों के व्यक्तित्व पर पड़ता है। यह बालक ही भविष्य के निर्माता होते है। यदि यह कहा जाए कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण में वहाँ के अध्यापकों का योगदान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी होता है तो यह अतितिश्योक्ति नहीं होगा। इस दृष्टिकोण से किसी भी राष्ट्र के उत्थान उच्च समुचित विकास सुयोग्य अध्यापकों की महत्ता स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है।

प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापकों का योगदान सर्वोपरि है। परम्परागत बी०टी०सी० (बेसिक टीचर सर्टीफिकेट) प्रशिक्षित अध्यापकों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ–साथ 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षित संस्थान' से दो वर्ष का प्रशिक्षण तथा टी०ई०टी० (टीचर इलिजिबिलीटी टेस्ट) निर्धारित है। जबकि विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ–साथ प्रशिक्षित स्नातक (बैचलर ऑफ एजुकेशन) तथा 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान' से 6 माह का प्रशिक्षण तथा टी०ई०टी० निर्धारित है। परम्परागत बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापक दो वर्ष के लम्बे प्रशिक्षण अवधि के कारण प्रथमिक शिक्षा के वातावरण में स्वयं को समायोजित कर लेते है तथा प्राथमिक शिक्षा हेतु अपने आप को मानसिक रूप से तैयार कर लेते है। ऐसे अध्यापक प्रशिक्षण के दौरान मानसिक रूप से परिपक्व हो जाते हैं कि उनका शैक्षिक सहयोग प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने में ही रहेगा। ऐसे अध्यापकों की शैक्षिक कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का उच्च स्तर होने की पूरी सम्भावनाएं होती है। परन्तु विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ–साथ बी०एड० तथा टी०ई०टी० निर्धारित है। विशिष्ट बी०टी०सी० चयनित अध्यापक अन्य उच्च उपाधि (पी–एच०डी०, नेट) धारक होते हैं जो उच्च शिक्षण संस्थानों या समकक्ष संस्थानो में शिक्षण कार्यों के लिए योग्य होते है। इनको उच्च शिक्षण संस्थानों में शैक्षणिक कार्य हेतु आगे

* आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
** शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

बढ़ने की पूर्ण सम्भावनाएं होती है परन्तु अपने शैक्षिक योग्यता के अनुसार रोजगार न मिल पाने के कारण प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु चयनित हो जाते है। ऐसे अध्यापक दिन रात प्रयास करते रहते हैं कि उनका उच्च व्यावसायिक गतिशिलता हो जाए उच्च आशाएं रखने वाले अध्यापकों का अपने व्यवसाय में कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का निम्न स्तर होने की पूरी सम्भावना होती है। शोधकर्ता के मस्तिष्क में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि योग्यता एवं प्रशिक्षण अवधि में अन्तर होने के कारण बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित दोनों प्रकार के अध्यापकों की व्यावसायिक कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन में अन्तर होता है। इसी प्रश्नगत बातों को ध्यान में रखते हुए इस शोध समस्या को शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के रूप में चयन किया है।

शिक्षा के अनेक स्तर हैं – प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा इत्यादि, किन्तु विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा का स्तर सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षा की पहली सीढ़ी है जिसे सफलता पूर्वक पार करके ही कोई व्यक्ति अपने अभिष्ट लक्ष्यों तक पहुंच सकता है। राष्ट्रीय विचार धारा एवं चरित्र निर्माण करने में जितना महत्वपूर्ण स्थान प्राथमिक शिक्षा का है उतना किसी दूसरे सामाजिक अभिकर्ता का नहीं है। प्राथमिक शिक्षा का मानव जीवन में वही महत्व है जो दृढ़ स्थायी भवन के निमार्ण में उसके आधार शिक्षा का होता है।

1.2 कार्य संतुष्टि –

कार्य संतुष्टि का अभिप्राय किसी कर्मचारी द्वारा उसके कार्य के प्रति निर्मित सामान्य अभिवृत्ति से है। इसका अनुमान इस आधार पर लगा सकते है कि कोई कर्मचारी अपने परिवेश से पुरस्कार की जो प्रत्याशा रहता है और वस्तुतः जितना प्राप्त होता है दोनों में कितना अन्तर है ? यह एक प्रकार की अभिप्रेरणा है जिसके फलस्वरुप कर्मचारी अपना कार्य सम्पादित करने में असीम आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है। यह कार्य संतुष्टि व्यैक्तिक स्तर पर अनुभुति किया जाता है और किसी भी रुप में इसकी सामूहिक व्याख्या नही की जा सकती है।

बुलक के अनुसार, 'कार्य संतुष्टि एक अभिवृत्ति है जो बहुत सी चाही और अनचाही अनुभवों के परिणाम है जिसमें व्यक्ति के अपने कार्य के प्रति जुड़ाव को परिलक्षित करता है।'

ब्राउन के अनुसार, 'कार्य संतुष्टि, व्यक्ति के अपने कार्य स्थिति के पक्षगत अनुभव या मनौवैज्ञानिक परिस्थिति है।'

गिलमर के अनुसार, 'कार्य संतुष्टि या असंतुष्टि विविध अभिवृतियों के परिणाम स्वरूप है जिसमें व्यक्ति सम्बन्धित कारकों और जीवन में सामान्य अपने कार्य से रहता है।'

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि जो कर्मचारी अपने कार्य से संतुष्ट है वे स्वस्थ मानसिक संतुलन रखते है। स्वस्थ मानसिक संतुलन कर्मचारी को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसके मनोबल को बनाये रखता है तथा उसकी उत्पादन क्षमता में किसी प्रकार की कमी नहीं आने देता है। अनेक अध्ययनों के द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि जो कर्मचारी अपने कार्य से असंतुष्ट होते है उनकी उत्पादन क्षमता कम हो जाती है। अतः कर्मचारी की कार्य असन्तोष को बचाये रखने के लिए आवश्यक है कि औसत स्तर के कर्मचारी को इस प्रकार का कार्य मिले कि वह केवल जीविकोपार्जन का साधन मात्र न हो बल्कि उसे अपने कार्य से उद्देश्य प्राप्त करने की प्रेरणा मिले और जीवन को सुखमय बनाने के सभी तत्व उसमें सम्मिलित हो।

1.3 अध्यापक कार्य संतुष्टि की संलकल्पना –

आदि काल से विद्वानों का मत यही रहा है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है और मानसिक प्रक्रियायें सुचारू रूप से कार्य करती है। कभी–कभी यह भी पाया जाता है कि दोनों (शरीर तथा मानसिक प्रक्रियायें) का तालमेल ठीक बना हुआ है, पर्याप्त संतुलन है फिर भी व्यक्ति अपने को ऐसी स्थिति में पाता है कि वह उतना नहीं प्राप्त कर पा रहा है जितना उसे मिलना चाहिए था। कभी–कभी वह यह भी सोचता है कि उसके जीवन में कही कोई कमी है। कभी–कभी उसे यह अनुभूति होती है कि अब वह और अधिक पाने के लिए संघर्ष करने में असमर्थ है और अन्त में उसकी धारणा बन जाती है कि इतना सब करने की कोई आवश्यकता नहीं है, जो है वह पर्याप्त है।

इस प्रकार जब व्यक्ति की सोचनें और चिंतन करने की प्रकृति बन जाती है तो वह यथार्थ से दूर चला जाता है और धीरे–धीरे तनाव के जाल में स्वयं फस जाता है। उसे वह सब कुछ मिल जाने पर भी जो उसे उसकी क्षमताओं एवं योग्यताओं के अनुकूल मिलना चाहिए था दुःखी रहने लगता है। मन की यह स्थिति ही असन्तोष है।

कार्य संतुष्टि किसी कर्मचारी में अंतर्निहित उसकी बहुत सी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है। इन मनोवृत्तियों का सम्बन्ध मात्र कार्य से होता है तथा इसका सम्बन्ध कई विशिष्ट तत्वों से भी रहता है, जैसे पारिश्रमिक, पर्यवेक्षक, रोजगार की निरंतरता कार्य अवस्थायें, प्रोन्नति के अवसर, कार्य का न्यायपूर्ण मूल्यांकन उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा आदि किसी न किसी रूप में कार्य संतुष्टि पर अवश्य प्रभाव डालती है। कर्मचारी के सर्वांगीण विकास के लिए अधिक वेतन, अच्छा रहन–सहन, शिक्षा तथा चिकित्सा सम्बन्धी सुविधायें, भविष्य की सुरक्षा आदि एक मात्र साधन नहीं है बल्कि उसका बौद्धिक विकास और संवेगात्मक अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर सब महत्वपूर्ण कारक ही बौद्धिक विकास समझने की क्षमता प्रदान करता है और संवेगात्मक अभिव्यक्ति जीवन सम्बन्धी समस्याओं के ताल–मेल स्थापित करने में सहायक होती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कार्य संतुष्टि व्यक्ति की एक ऐसी सुखद और धनात्मक, सांवेगिक अनुभूति है जो स्वतः व्यक्ति के अपने ही कार्य अथवा कार्य अनुभवों के मूल्यांकन से कम हो। यह भाव व्यक्ति के उस प्रत्यक्षीकरण मात्र से ही पैदा होता है कि उसके कार्य कहाँ तक जरूरी मूल्यों को संतुष्ट करने का अवसर देते हैं।

1.4 अध्यापक कार्य संतुष्टि मापनी के आयाम –

मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में संतुष्टि एक ऐसी अनुभूति की अवस्था है जो व्यक्ति को पूर्ण निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। यह अनेक मनोवृत्तियों का योग है जिन्हें व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन में बनाये रखता है। इस प्रकार संतुष्टि वही है जहाँ उद्देश्य है। अध्यापक कार्य संतुष्टि आंकने के लिए निम्नलिखित आयामों को ध्यान में रखा गया है –

1. वेतन एवं अन्य उपलब्धियां (Salary and Fringe Benefits)
2. सहयोगी अध्यापक से सम्बन्ध (Interpersonal relations among colleagues)
3. अध्यापक, प्राधानाचार्य सम्बन्ध (Teacher –Principal Relations)
4. व्यावसाय (Profession)
5. अध्यापक–विद्यार्थी सम्बन्ध (Teacher-Student Relations)
6. संस्था की व्यवस्था (Institution)
7. कार्य की स्थिति (Working Conditions)
8. कार्य का भार (Work Load)
9. क्षमता का उपयोग (Ability Utilization)
10. उपलब्धियाँ (Achivements)
11. क्रियायें (Activity)
12. सामूहिक सहयोग की भावना (Community Aspect)
13. पर्यवेक्षण (Supervision)
14. परिवारिक जीवन (Family Life)
15. स्वतंन्त्रता (Freedom)
16. नीतियां एवं क्रियान्वयन (Policies and Practices)
17. विकास की सम्भावनायें (Posibility of Growth and Development)
18. पुस्कालय नीतियां एवं उनका क्रियान्वयन (Library Policies and Practices)
19. सुरक्षा (Security)
20. पहचान एवं प्रास्थिति (Recognition and Status)

1.5 अध्यापक प्रभावशीलता की अवधारणा –

अध्यापक प्रभावशीलता अधिक भ्रामक प्रत्यय है। प्रभावशीलता एक सापेक्षिक प्रत्यय है। अध्यापक प्रभावशीलता से तात्पर्य शिक्षण कौशल, व्यावसायिक योग्यताओं तथा शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने से

है। इसको समझने के लिए दो शब्दों को समझना आवश्यक है – 'अध्यापक' एवं 'प्रभावशीलता'। दार्शनिकों ने अध्यापक की परिभाषा करने का प्रयास किया है। रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार अध्यापक एक जलते हुए दीपक के समान है। एक जलता हुआ दीपक दूसरे दीपक को जला सकता है। छात्रों में अपेक्षित योग्यता होती है उनका संचालन करना अध्यापक का कर्तव्य होता है। एक अध्ययनशील व्यक्ति ही दूसरे को अध्ययन के लिए प्रोत्साहित कर सकता है एक अध्यापक जीवन पर्यन्त छात्र रहता है।

प्रभावशीलता एक सापेक्षिक प्रत्यय है यह किसी मापदण्डों की ओर संकेत करता है। डी०डी० रेयान ने प्रभावशीलता के लिए तीन मानदण्डों का उल्लेख किया है –

(i) योग्यता मापदण्ड

(ii) प्रक्रिया मापदण्ड

(iii) परिणाम मापदण्ड

1.6 अध्यापक प्रभावशीलता की परिभाषाएं –

अध्यापक प्रभावशीलता की संकल्पना से सम्बन्धित कुछ परिभाषाएं इस प्रकार है –

फ्लेंडर्स और साइमन[1] के अनुसार 'अध्यापक प्रभावशीलता की विशेषताओं, शिक्षण कार्यो और अध्यापन के परिणाम से सम्बन्धित है।'

एक प्रभावशाली शिक्षक वह होता है जिसे पाठ्यक्रम सामग्री का स्पष्ट ज्ञान हो, जो अध्यापक के निश्चित उद्देश्यों को तय करता हो, जो अध्यापन सामग्री का उचित ढंग से संग्रह कर पाता हो, जिसमें संप्रेषण की पर्याप्त क्षमता हो, जो अध्यापन कक्ष को व्यवस्थित ढंग से रखता हो और जो धैर्यवान सहानुभूतिपूर्ण कार्य में रूचि रखने वाला निष्पक्ष एवं न्यायप्रिय हो और जिसमें उत्साह, सतर्कता जैसे व्यक्तिगत गुण भी हो।

1.7 समायोजन की अवधारणा –

समायोजन दो शब्दों से मिलकर बना है – 'सम' एवं 'आयोजन'। यहाँ 'सम' का आशय 'भली भांति' तथा तथा 'आयोजन' का अर्थ 'व्यवस्था' से लगाया जा सकता है। दूसरें शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सुव्यवस्था या अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएं पूरी हो जाय को समायोजन कहा जाता है। समायोजन को अनुकूलन व्यवस्थापन, सामंजस्य आदि नामों से भी जाना जाता है।

मानव जीवन की परिस्थितियां निरन्तर परिवर्तनशील है। शैशव से लेकर वृद्धावस्था तक मनुष्य के सम्मुख नयी–नयी समस्यायें और नयी–नयी परिस्थितियां आती रहती है और वह अपनी क्षमता द्वारा इन समस्याओं को सुलझाने और परिस्थितियों से निपटने की चेष्टा करता रहता है। यही उसकी समायोजन की प्रक्रिया है।

लारेंस एफ० शैफर[2] के शब्दों में 'समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं और उन आवश्यकताओं की सृष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखता है।'

समायोजन की परिभाषा करते हुए मनोवैज्ञानिक हेनरी सी० स्मिथ ने लिखा है कि 'अच्छे समायोजन से हमारा तात्पर्य है जो कि यथार्थ पर आधारित तथा सन्तोष देने वाला हो। कम से कम वह कालान्तर में व्यक्ति की उन कुठांओं, तनाओं एवं दुश्चिन्तओं को कम करे, जिसका की होना अनिवार्य है।[3]

1- N.A. Flanders and Simon, (1969) teaching effectiveness, A review of research, 1960-66 in Encyclopedia of Educational Research, P.L. Ebel, Ed, Chicago : Rand MC Nally, Pg-1423-1438.

2. Laurance F. Shaffer, (1948) Foundation of Psychology Edited by Borin Langfald and weld John Willey and sons. Inc. New York, Pg. 5

3. H.C. Smith, (1951) Personality adjustment, New York, Mc Graw Hill Book Co. Pg. 25.

प्रो० विलियम ट्रॉ[4] के अनुसार 'समायोजन पर्यावरण से एक ऐसा सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध है जो व्यक्ति के अधिकतर आवश्यकताओं की पूर्ति समाज द्वारा स्वीकृत तरीकों से करता है और इसका परिणाम व्यहार के विभिन्न रूपों में दिखाई देता है जो कि निष्क्रिय अनुमोदन से लेकर सक्रिय समर्थन की अभिसीमा के अन्तर्गत होते हैं।'

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि समायोजन से तात्पर्य पर्यावरण से सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध तथा उस दशा से है जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति प्रायः अपनी सभी आवश्यकताओं, शारीरिक तथा सामाजिक मांगों आदि की पूर्ति सामान्य रूप से कर लेता है। व्यक्ति का समायोजन उसकी अपनी मनोवैज्ञानिक सुविधाओं पर निर्भर है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसे जीवन में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का सामना न करना पड़ता हो। इस लिये समायोजन के अन्तर्गत व्यक्ति अपने जीवन की यथार्थ परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसा करता है जिससे कि वह अपनी कठिनाइयों को हल कर लेता है और इस प्रकार अपना जीवन सुख और सन्तोष के साथ व्यतीत करता है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि अपना जीवनयापन सुरूचिपूर्ण ढंग से करना है तो स्वयं को समाज एवं वातावरण के साथ उसे समायोजित करना होगा। समायोजन की समस्या उचित शिक्षा द्वारा भी दूर की जा सकती है। अतः समायोजन के लिए विद्यालय का स्थान महत्वपूर्ण है। व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिये अपने वातावरण और परिस्थिति के साथ समायोजन स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति के जीवन में विभिन्न प्रकार के अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती है जिनका उसे सामना करना पड़ता है। कुछ लोग अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समायोजन करने का प्रयत्न करते हैं। कुछ लोग अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समायोजन स्थापित कर लेते है और कुछ हार मानकर अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति असंतोष, भग्नाशा और मानसिक द्वन्द और तनाव के शिकार बन जाते हैं। ये सभी बातें शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। प्रायः जीवन के सभी परिस्थितियों में समायोजन आवश्यक है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल होने के लिए समायोजन करने की क्षमता होनी चाहिए। व्यक्ति को ऐसी परिस्थिति से दूर रहना चाहिए जिससे असमायोज को प्रोत्साहन मिलता है। दूसरों शब्दों में कहा जा सकता है कि 'जीवन जीने का दूसरा नाम समायोजन है।'

1.8 शोध समस्या–

प्रस्तुत शोध की शोध समस्या निम्नलिखित है–

'गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'

1.11 शोध के तकनीकी शब्दों की व्याख्या –

1– मण्डल –

शासन ने प्रशासनिक सुविधा के लिए कुछ जिलों का समुच्चय बनाया है जिसे 'मण्डल' कहते है। इन जिलों के समुच्चय में एक मण्डल मुख्यालय होता है इस मण्डल मुख्यालय में एक मण्डलाधीश होता है जो प्रशासनिक कार्यो का संचालन करता है।

2– प्राथमिक विद्यालय –

प्राथमिक विद्यालय से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जिनमें कक्षा 1 से 5 तक की कक्षायें संचालित होती है और ये विद्यालय 'बेसिक शिक्षा परिषद्' के अधीन कार्य करती है। उत्तर प्रदेश सरकार के पुनरीक्षित मानकों के अनुसार 300 या इससे अधिक आबादी की बस्ती में एक प्राथमिक विद्यालय होना चाहिए। दूसरे प्राथमिक विद्यालय की दूरी 1 किमी० से अधिक नही होना चाहिए।

3– बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापक –

बेसिक टीचर सर्टीफिकेट प्रशिक्षित अध्यापकों के अन्तर्गत वे अध्यापक आते है जिनकी न्युनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक तथा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षित संस्थान (D.I.E.T.) से दो वर्ष के बी०टी०सी० प्रमाण पत्र प्राप्त करते है।

---

4. W.C. Traw, (1970) Psychology in Teaching an Learning, New Delhi, Eurasia Publishing House, Pg. 450.

4– विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापक –

विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापक के अन्तर्गत वे अध्यापक आते है जिनकी न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ–साथ स्नातक प्रशिक्षित (बी०एड०) हो तथा वे जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षित संस्थान (D.I.E.T.) से छः माह का विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षण प्राप्त हो। प्रशिक्षणोपरान्त प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन कार्य करते है। इस श्रेणी के अध्यापकों के पास उच्च डिग्री (नेट, स्लेट, पी–एच०डी० एवं डि०लिट् इत्यादि) भी होती है।

5– कार्य संतुष्टि –

कार्य संतुष्टि वह आनन्दायक व सकरात्मक अभिवृत्ति है जो कर्मचारी द्वारा अपने कार्य के प्रति व्यक्त की जाती है। ये अभिव्यक्ति कुछ विशेष कारकों जैसे वेतन, कार्य की दशायें, प्रोन्नति का अवसर, समस्या का समाधान तथा लाभांश आदि से सम्बंधित है।

6– प्रभावशीलता –

अध्ययन की प्रभावशीलता का अर्थ अध्यापकों तथा विद्यालयों के साथ सम्बन्धों, शिक्षण कार्यों एवं कक्षा–कक्ष शिक्षण के परिणाम की गुणवता से होता है। अध्यापकों के प्रभावशीलता का मापन उन छात्रों के परिणाम से होता है जिनकों वह पढ़ाता है।

ये प्रभावशाली अध्यापक वे होते है जो विद्यार्थियों को बुनियादी कौशलों, अवबोध, उचित कार्य, आदतों, वांछनीय अभिवृत्तियों, मूल्यों निर्णयों एवं समुचित व्यक्तिगत समायोजन के विकास में सहायता प्रदान करते है।

7– समायोजन –

समायोजन संतुलन की वह दशा है जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं, परिस्थितियों, वातावरण तथा जीवन में आने वाली चुनौतियों से सामंजस्य स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं।

1.12 शोध के विशिष्ट उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य हैं –

1. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
4. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों के प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।
5. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।
6. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के प्रभावशीलता का अध्ययन।
7. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
8. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
9. बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

1.13 शोध की परिकल्पना–

इस शोध में शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है जो अधोलिखित है –

1 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं है।
2 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं है।

3 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं है।
4 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों के प्रभावशीलता में अन्तर नहीं है।
5 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के प्रभावशीलता में अन्तर नहीं है।
6 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के प्रभावशीलता में अन्तर नहीं है।
7 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन में अन्तर नहीं है।
8 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के समायोजन में अन्तर नहीं है।
9 बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के समायोजन में अन्तर नहीं है।

2.1 सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन

2.1.1 विश्व स्तर पर कार्य संतुष्टि से सम्बन्धित शोध–

ओलाडेवा, एस०ए०[5] (2001) ने शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन किया। उन्होंने अन्य आयाम–अवसर की उपलब्धता, प्राप्ति, जॉब का विकास, उत्तरदायित्व देना, स्कूल में पर्यवेक्षण, प्रधानाचार्य के साथ व्यावसायिक व्यैक्तिक अन्तःक्रिया का अध्ययन किया। ऐसे शिक्षक जो व्यावसायिक शिक्षक थे उनकी सार्थक रूप से अभिव्यक्ति अच्छी थी। लेकिन उनका समाज में आर्थिक रूप से प्रभाव कम था।

राबर्ट एवं फ्रांसिस[6] (2002) ने प्राथमिक विद्यालयों में प्रधानाचार्य एवं उनके कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किया। प्रधानाचार्य ज्यादे समय अपने कार्य मूल्यांकन एवं स्टाफ का पर्यवेक्षण करने में खर्च करते तुलना में पेपर का कार्य करने एवं अपने रिकार्ड को सही रखने में। जब प्रधानाचार्य मूल्यांकन एवं स्टाफ के क्रिया कलापों का पर्यवेक्षण करते थे तो वह काफी संतुष्ट थे, तुलना में पेपर का कार्य एवं रिकार्ड रखने में।

2.1.2 भारतीय सन्दर्भ में कार्यसंतुष्टि से सम्बन्धित शोध–

व्यास, एम०वी०[7] (2001) ने प्राथमिक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का उनके लिंग, वैवाहिक स्थिति एवं शैक्षिक योग्यता के संदर्भ में अध्ययन किया। आदर्श के रूप में न्यादर्श पोरबन्दर और जूनागढ़ जिले के 3000 प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों को गुच्छ प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया जिसमें 1770 पुरूष शिक्षक तथा 1230 महिला शिक्षिकाएं थी। शोधार्थी ने स्व निर्मित कार्य संतुष्टि इन्वेटरी का प्रयोग आकड़े संग्रह के लिए किया किया आकड़ों के विश्लेषण के लिए साख्यिकीय तकनीकों मध्यमान, मध्यांक, मानक विचलन तथा काई वर्ग का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम प्राप्त हुए कि विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। पुरूष शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति से उनकी कार्य संतुष्टि प्रभावित थी। शिक्षकों की निम्न शैक्षिक योग्यता से उनके कार्य संतुष्टि प्रभावित पायी गयी।

---

5. ओलाडेवो, एस०ए० (2001) एव इन्वेस्टिगेशन ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड विथ सेटिस्फेक्शन एमांग द टीचर्स इन सेकेण्ड्री इन्स्टीट्यूशन इन नाइजिरिया, पी–एच०डी० एजुकेशन, एब्सट्रैक्ट इन्टरेनेशनल वैल्यूम 62, पृ0–1026
6. राबर्ट एवं फ्रासिस (2002) इन्साइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन रिसर्च, ए प्रोजेक्ट ऑफ द अमेरिकन एजुकेशन रिसर्च एसोसिएशन, फर्स्ट एडिशन, पृ0–645।
7. व्यास, एम०वी० (2001) द जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ प्राइमरी टीचर्स विथ रिफ्रेन्स टू द सेक्स, मेरिटल स्टेट्स एण्ड एजुकेशनल क्वालिफिकेशन, पी–एच०डी० एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट

जोशी, हरिमा एल०[8] (2004) ने गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र के बी०एड० प्रशिक्षित शिक्षक तथा बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में बी०एड० प्रशिक्षण प्राप्त तथा 120 बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों को गुच्छ प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया। आकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्यनोपरान्त निष्कर्ष प्राप्त हुए कि बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की कार्य संतुष्टि एवं उनकी व्यावसायिक जुड़ाव में सकारत्मक सहसम्बन्ध पाया गया। पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक जुड़ाव में सकारात्मक सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। ऐसे शिक्षक जो एकांकी परिवार से आते है उनकी व्यावसायिक जुड़ाव संयुक्त परिवार के शिक्षकों से अधिक था।

पव्ला[9] (2012) ने पंजाब में व्यावसायिक विद्यालयों के शिक्षकों में कार्य संतुष्टि पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य व्यावसायिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों तथा ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि स्तर का पता लगाना एवं उनकी तुलना करना था। इस अध्ययन से परिणाम प्राप्त हुए कि व्यावसायिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित व्यावसायिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

गंथुगु[10] (2013) ने केन्या के मोमबासा जिले के माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों की कार्य संतुष्टि का उनके उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। आकड़ों के संग्रह हेतु मोमबासा के 37 माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को प्रश्नावली प्रदान की गयी जिनमें से 30 प्रश्नावलियों को ही प्राप्त किया गया। अध्यनोपरान्त पाया गया कि जो प्रधानाचार्य अपने कार्य के प्रति संतुष्ट थे उनकी उपलब्धि अच्छी थी।

सिंह, जय प्रकाश[11] (2013) ने उत्तर प्रदेश के स्ववित्तपोषित कालेजों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में सम्बन्ध पर अध्ययन किया। अध्ययन हेतु सादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 180 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया गया। आंकड़ों के संग्रह के लिए कार्य संतुष्टि मापनी तथा शिक्षक दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययनोपरान्त निष्कर्ष पाये गये कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में 0.05 स्तर पर सम्बन्ध सकारात्मक एवं सार्थक पाया गया। पुरूष एवं दक्षता समान पायी गयी। शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षकों को कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। पी०जी०एम०एड० शिक्षक प्रशिक्षकों तथा पी०जी०एम०एड० नेट/पी०एच०डी० शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कार्य दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

2.1.3 प्रभावशीलता पर अध्ययन–

यू०[12] (2005) ने शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा विद्यालय प्रभावशीलता में सम्बन्ध का परीक्षण किया। इस अध्ययन में निष्कर्ष प्राप्त हुए कि हाईस्कूल स्तर के माध्यमिक शिक्षकों की शिक्षण

---

8. जोशी, हरीका एल० (2004) ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ जॉब स्ट्रेस, जॉब इनवाल्वमेन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ बी०एड० टीचिंग एण्ड बी०एड० ट्रैन्ड टीचर्स ऑफ राजकोट सौराष्ट्र रीजन ऑफ गुजरात स्टेट, पी–एच०डी० एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट
9. पव्ला (2012) ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन अमांग टीचर्स ऑफ प्रोफेशनल कालेज इन पंजाब, इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वाल्यूम 10 (2012), अक्टूबर 2012
10. जेम्स एण्ड हन्नाह डब्लू० वचिरा (2013) जॉब सेटिस्फेक्शन फैक्टर्स दैट इनफ्लूएन्स द परफारमेन्स ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल प्रिंसिपल्स इन देयर एडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शन इन मोमबासा डिस्ट्रिक्ट केन्या, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च 1:2, फरवरी 2013
11. सिंह, जयप्रकाश (2013) रिलेशनशिप बिट्वीन टीचिंग कॉम्पीटेंस एण्ड सेटिस्फेक्शन : ए स्टडी एमांग टीचर एजुकेटर्स वर्किंग इन सेल्फ फाइनेसिंग कालेज इन उत्तर प्रदेश इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च 3:5, 2013
12. यू०टी०वाई०, रॉबर्ट (2005), रिलेशनशिप बिटवीन टीचर्स टीचिंग इफेक्टिवनेस एण्ड स्कूल इफेक्टिवनेस इन कॉम्प्रेहेन्सीव हाई स्कूल इन ताइवान रिपब्लिक ऑफ चाइना, 2005 इ०आर०आई०सी० आन लाइन सब्मिशन पेपर प्रजेन्टेड एट द इंटरनेशनल कांग्रेस।

प्रभावशीलता का स्तर तथा विद्यार्थियों के साथ सम्बन्ध उच्च था जबकि उच्च स्तर के शिक्षकों की शिक्षण कुशलता निम्न पायी गई। उच्च स्तर के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता ने विद्यालय की प्रभावशीलता को बढ़ा दिया। लिंग, विद्यालय के प्रकार, शिक्षण कुशलता, अनुदेशनात्मक सामग्रियों की क्रमबद्ध प्रस्तुति तथा कक्षा–कक्ष का अच्छा वातावरण, विद्यालयों की प्रभावशीलता के लिए पाँच निर्धारक कारक है।

डिना[13] (2006) ने शिक्षक प्रभावशीलता तथा विद्यार्थियों की उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन किया। परीक्षण से प्राप्त परिणामों का सीधा सम्बन्ध शिक्षण प्रभावशीलता की गुणवत्ता से पाया गया। वह सम्बन्ध इंगित करता है कि शिक्षक की तैयारी तथा शिक्षक की गुणवत्ता का सम्बन्ध विद्यार्थियों के उपलब्ध से है।

हेकर्ट एवं अन्य[14] (2006) ने पाठ्यक्रम अनुदेशक तथा विद्यार्थियों के सम्बन्ध में अध्ययन किया शिक्षण प्रभावशीलता को शिक्षण कौशल, विद्यार्थियों से तादात्म्य कठिनाई की उपयुक्तता तथा पाठ्यक्रम अधिगम जैसे पक्षों से जोड़ा गया। पाठ्यवस्तु की रूचि अपेक्षित ग्रेड, महिला एवं पुरूष, शिक्षण उपलब्धि के सभी पक्षों से सार्थक रूप से सम्बन्धि थे।

वैना[15] (2007) ने शिक्षण प्रभावशीलता पर सूचना तकनीकि के प्रभाव का अध्ययन किया। सूचना तकनीकी से अभिप्राय उस प्रक्रिया से है, जिसमें सूचना को चैनल के माध्यम से प्राप्तकर्ता तक पहुँचाया जाता है। जबकि शिक्षण प्रक्रिया में सूचना को शिक्षक द्वारा विद्यार्थी तक पहुँचाया जाता है। शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार हेतु सूचनाओं के प्रभावशाली स्थानान्तण की तकनिकों का प्रयोग किया जाता है।

2.1.4 समायोजन पर अध्ययन–

गगनदीप, के०[16] (1986) ने अपने अध्ययन में पाया कि जो विद्यार्थी स्कूल सोसियो–इकोनामिक स्टेटस पर आधारित वातावरण में अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने कम समस्याएं प्रदर्शित की उन विद्यार्थियों की तुलना में जो वातावरण में शिक्षा नहीं प्राप्त कर रहे थे। लड़के व लड़कियों में उत्पन्न होने वाले सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाओं में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं था। विभिन्न प्रकार के सुरक्षात्मक प्रयासों का घरेलू समायोजन के साथ नकारात्मक सम्बन्ध था।

पाण्डेय, एन०[17] (1986) ने अपने अध्ययन में पाया कि वो बच्चें जो स्कूल जाते है उनकी प्रतिक्रिया उन बच्चों की तुलना में अधिक अच्छी थी, जो स्कूल नहीं जाते हैं साथ ही साथ यह भी परिणाम निकला कि विद्यालय जाने व आयु इन दोनों का बच्चों के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

डोंगा, एन०एस०[18] (1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि महिला प्रशिक्षणार्थियों ने पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक समायोजन का प्रदर्शन किया समायोजन पर वैवाहिक जीवन शिक्षा के स्तर, परिवार में स्थिति और आयु इनका कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

मिश्रा, अर्चना[19] (1992) ने अपने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक विद्यालय के चयनित अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं को अपने विषय का ज्ञान है। अध्यापकों का मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ्य होना,

---

13. डिना, कोडी (2006), टीचिंग इफेक्टिवनेस एण्ड स्टुडेन्ट शेरमैन हिलेन अचीवमेंट इक्जामिंग द रिलेशनशिप एजुकेशनल रिसर्च क्वार्टर्ली 29, पी० 40–51।
14. हेकर्ट, टेरिसा एण्ड अदर (2006), रिलेशन ऑफ कोर्स इंस्ट्रक्टर्स एण्ड स्टूडेंट करेक्ट्रिस्टिक्स टू डाइमेंशन ऑफ स्टूडेन्ट रेटिंग ऑफ टीचिंग इफेक्टिवनेस, 2006 (इ०जे० 765314) कोलज स्टूडेन्ट जर्नल, 40, पृ0195–203।
15. वैना, झी–जुव (2007), इम्पैक्ट ऑफ इन्फारमेशन इन्ट्रापी ऑन इफेक्टिनेस, इ०आर०आई०सी०, 2007।
16. गगनदीप, के० (1986) डिफेन्स मैकनिज्म यूज्ड बाई द एडोलसेन्ट स्कूल इनवायर्नमेन्ट एण्ड देयर इम्पैक्ट ऑन देयर ऐडजस्टमेन्ट टू स्कूल एण्ड होम, पी–एच०डी० एजुकेशन, पन्त यूनिवर्सिटी।
17. पाण्डेय, एन० (1986) एफेक्ट्स ऑफ स्कूलिंग ऑन द डेवलपमेन्ट ऑफ लॉजिकल थिकिंग एण्ड ऐडजस्टमेन्ट अमंग इलीमेंटरी स्कूल चिल्ड्रेन, पी–एच०डी० एजुकेशन, उत्कल यूनीवर्सिटी।
18. डोंगा, एन०एस० (1987) ए स्टडी ऑफ द ऐडजस्टमेन्ट ऑफ ट्रेनीज ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग कालेजेज इन गुजरात, पी–एच०डी० एजुकेशन, सागर यूनीवर्सिटी।
19. मिश्रा, अर्चना (1992) केन्द्रीय एवं राजकीय विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन समस्याओं का उनके आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, पी–एच०डी० एजुकेशन, गोरखपुर यूनिवर्सिटी।

चरित्रवान होना, विद्यार्थियों के साथ निष्पक्ष तथा न्यायपूर्ण व्यवहार करना आदि भूमिकाओं को प्रमुख से महत्वपूर्ण माना क्योंकि इन भूमिकाओं के प्रति अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का सामाजिक, आर्थिक तथा कार्य संतुष्टि एवं प्रत्यक्षीकरण की भूमिका विद्यमान है।

3.1 शोध अभिकल्प (Research Design) –

प्रस्तुत शोध विवरणात्मक शोध (Explaratory Research) के अन्तर्गत 'घटनोत्तर शोध' (Ex-Post Facto Research) प्रकार का है। 'घटनोत्तर शोध' एक इन्द्रियानुभविक शोध (Empirical Investigation) है। इसमें शोधकर्ता किसी प्रभाव (Effect) के आधार पर उसके सम्भावित कारकों (Causal) का पता लगाने की कोशिश करता है। जब चरों के तुलनात्मक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है तो ऐसे घटनोत्तर शोधों को सहसम्बन्धात्मक शोध (Co-rrelational Research) भी कहते हैं।

वर्तमान शोध घटनोत्तर प्रकार का है लेकिन आकड़ों के विश्लेषण हेतु समूहान्तर अभिकल्प (Between Groups) के अन्तर्गत रखकर 'प्रसरण विश्लेषण' (ANOVA) किया गया है। अभिकल्प 2 (BTC, SBTC) X 2 (Male, Female) X 2 (Rural, Urban) प्रकार का था। इस शोध में कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन को आश्रित चर (Dependent Varriable) माना गया है।

3.2 न्यादर्श (Sampling)–

प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के 18 मण्डलों में से एक मण्डल 'गोरखपुर मण्डल' का चयन 'लाटरी विधि' से किया गया है। इस मण्डल में चार जिले गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया व कुशीनगर है। गोरखपुर जनपद में 19 विकास खण्ड, महराजगंज में 12 विकास खण्ड, देवरिया में 16 विकास खण्ड व कुशीनगर में 14 विकास खण्ड है। उत्तर प्रदेश 'बेसिक शिक्षा परिषद' द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में गोरखपरु जनपद के सभी 19 विकास खण्डों में लगभग 2047 प्राथमिक विद्यालय संचालित है। महराजगंज के 12 विकास खण्डों में लगभग 1482 प्राथमिक विद्यालय, देवरिया के 16 विकास खण्डों में लगभग 1781 तथा कुशीनगर के 14 विकास खण्डों में लगभग 2003 प्राथमिक विद्यालय संचालित है।

प्रस्तुत शोध को ध्यान में रखकर जनसंख्या का चयन 'गोरखपुर मण्डल' के सभी जिलों से किया गया है। गोरखपुर मण्डल के सभी जिलों में 'बेसिक शिक्षा परिषद्' द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय प्रस्तुत शोध की जनसंख्या है। सम्पूर्ण जनसंख्या से आकड़ों को प्राप्त करना अत्यधिक खर्च के साथ–साथ समय भी लगेगा। अतः इस दृष्टिकोण से न्यादर्श का चयन किया गया है।

गोरखपुर मण्डल के चार शैक्षिक जिलों (गोरखपुर, महराजंगज, देवरिया व कुशीनगर) के समस्त जिलों में उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापक शोध की जनसंख्या है। गोरखपुर के 19 विकास खण्डों में 'बेसिक शिक्षा परिषद्' द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में से 60 प्राथमिक विद्यालयों का चयन लाटरी विधि से किया गया, इसमें से 140 अध्यापकों को 'आकस्मिक विधि' (Accidental Method) से चुना गया है। इसी प्रकार महराजगंज के 12 विकास खण्डों में से 30 प्राथमिक विद्यालयों में से 100 अध्यापकों, देवरिया के 16 विकास खण्डों में से 40 प्राथमिक विद्यालयों में से 110 अध्यापकों तथा कुशीनगर के 14 विकास खण्डों में 40 प्राथमिक विद्यालयों में से 130 अध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। इस प्रकार सभी चारों जिलों में 480 न्यादर्श का चयन किया गया जो सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

3.5 मापन के उपकरणों का चुनाव एवं निर्माण –

शोध हेतु निम्नलिखित प्रश्नावली एवं परीक्षण की आवश्यकता पड़ी –

3.5.1 अध्यापक कार्य सतुष्टि मापनी

3.5.2 अध्यापक प्रभावशीलता मापनी

3.5.3 अध्यापक समायोजन मापनी

3.5.1 अध्यापक कार्य संतुष्टि मापनी –

प्रस्तुत शोध में प्रथम आश्रित चर 'अध्यापक कार्य संतुष्टि' को ज्ञात करने के लिए डा०एस०पी० गुप्ता व जे०पी० श्रीवास्तव द्वारा निर्मित 'अध्यापक कृत्य संतोष मापनी (1981)' का प्रयोग किया गया है। यह एक मानकीकृत मापनी (Standerdised Scale) है। यह मापनी लिकर्ट के पाँच बिन्दू मापनी की तरह

है। इस मापनी में 80 प्रश्न (कथन) है। जिस पर अध्यापकों को अपना मत व्यक्त करना है जिसके द्वारा अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का मापन किया गया है। इस मापनी में सभी सकारात्मक कथनों के मूल्यांकन अधिकतम से न्यूनतम जैसे पूर्णतः सहमत के लिए 5 अंक, सहमत के लिए 4 अंक, अनिश्चित के लिए 3 अंक, असहमत के लिए 2 अंक, एवं पूर्णतः असहमत के लिए 1 अंक दिया गया है एवं सभी नकारात्मक कथनों का निम्नतम से अधिकतम जैसे पूर्णतः सहमत के लिए 1 अंक, सहमत के लिए 2 अंक, अनिश्चित के लिए 3 अंक, असहमत के लिए 4 अंक एवं पूर्णतः असहमत के लिए 5 अंक दिया गया है।

3.5.2 विश्वसनीयता –

शोध कार्य में लायी गयी 'अध्यापक कृत्य संतोष मापनी' की विश्वसनीयता उच्च पायी गयी है। इस मापनी का परीक्षण पुनः परीक्षण विश्वसनीयता 0.755 तथा स्पीयर ब्राउन सूत्र के आधार पर निकाली 'अर्द्ध विच्छेद विश्वसनीयता' (Split-Half) 0.811 है। इससे स्पष्ट है कि प्रयुक्त मापनी उच्च रूप से विश्वसनीय है। इस मापनी की वैधता 0.476 है।

3.5.3 अध्यापक प्रभावशीलता मापनी का निर्माण–

प्रस्तुत शोध में द्वितीय आश्रित चर 'अध्यापक प्रभावशीलता' है। इसके मापन हेतु 'अध्यापक प्रभावशीलता मापनी' का निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गया। इस मापनी के निर्माण में उपकरण निर्माताओं द्वारा सर्वप्रथम आयाम तय किये गए। इन आयामों के निर्धारण में अध्यापकों और विषय विशेषज्ञों से परामर्श किया गया। इस प्रकार अध्यापक प्रभावशीलता मापनी के कथनों की एक सूची तैयार की गयी। यह सूची प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, सहायक अध्यापकों, शिक्षक–प्रशिक्षक एवं प्राथमिक शिक्षा के प्रशासकों से साक्षात्कार करके 70 कथनों की सूची तैयार की गयी।

3.5.4 कथनों का चयन –

अध्यापक प्रभावशीलता मापनी के 12 आयामों पर 70 कथनों का निर्माण करने के पश्चात् अध्ययन के लिए सम्बन्धित विशेषज्ञों को उनके सुझाव हेतु दिया गया। प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित इन सभी व्यक्तियों के आलोचना एवं टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए 22 कथनों को अस्वीकृत कर दिया गया।

3.5.5 अध्यापक प्रभावशीलता मापनी का प्रशासन–

प्राथमिक विद्यालयों से 'आकस्मिक विधि' से चुने गये 260 पुरूष एवं महिला अध्यापकों के समूह पर 48 कथनों वाली मापनी का प्रशासन किया गया। उत्तरदाताओं को यह जोर देकर बताया गया कि उसमें से किसी भी कथन को छोड़ना नहीं है एवं इन कथनों के अच्छे या बुरे की कोई बात नहीं है। उन्हें अपने व्यक्तिगत सहमति और असहमति के आधार पर प्रत्येक कथन का उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि उनके प्रत्युत्तरों को गोपनीय रखा जायेगा। इसमें यह भी बताया गया कि प्रश्नावली भरते समय, समय को भी ध्यान में रखे कि कितना समय भरते समय लग रहा है। किसी भी उत्तरदाता के पूर्ण प्राप्तांक जानने के लिए प्रत्येक कथन सम्बन्धी उसके प्राप्तांकों का कुल योग किया गया। इस मापनी में प्राप्तांकों का विस्तार 48 कथनों से अधिकतम् 240 तक था जो निम्नवत 48 और अधिकतम् 240 तक अध्यापक प्रभावशीलता को बतलाते है। मापनी सम्बन्धी निर्देश मापनी के मुख्य पृष्ठ पर लिखे हुए है।

3.5.6 प्राप्तांकों का निर्धारण –

यह मापनी लिकर्ट की 5 बिन्दु मापनी पर आधारित है। इस मापनी के सभी 48 कथन धनात्मक है। प्रत्येक कथन के सामने पूर्णतः सहमत के लिए 5 अंक, सहमत के लिए 4 अंक, अनिश्चित के लिए 3 अंक, असहमत के लिए 2 अंक, तथा पूर्णतः असहमत के लिए 1 अंक दिया गया था। प्रत्येक कथन से सम्बन्धित प्राप्तांकों का कुल योग अध्यापक की प्रभावशीलता को व्यक्त करता है। सम्पूर्ण प्राप्तांक 48 से 240 तक प्रसारित है जो क्रमशः न्यूनतम अध्यापक प्रभावशीलता और अधिकतम अध्यापक प्रभावशीलता की ओर संकेत करता है।

3.5.7 विश्वसनीयता –

किसी भी शोध उपकरण की सबसे बड़ी विशेषता उसकी विश्वसनीयता है। इस मापनी की विश्वसनीयता 'अर्द्ध–विच्छेद विधि' (Split-Half Method) से ज्ञात की गयी। अर्द्ध–विच्छेद विधि कम्प्यूटर

साफ्टवेयर IBM. SPSS. Statistics. Version 21 से ज्ञात की गयी है। जिसमें प्रथम भाग का 'क्रॉनबैक अल्फा' (Cronbach's Alpha) का मान .77 (24 कथनों) पर पाया गया है तथा द्वितीय भाग का ''क्रॉनबैक अल्फा'' का मान .82 (24 कथनों) पर किया गया है। इन दोनों प्रारूपों के बीच 'सहसम्बन्ध' (Co-rrelation) .67 है एवं 'स्पीयरमेन ब्राउन इक्वल लेन्थ कोएफिसिएण्ट' (Spearman-Brown Equal length Coefficent) .80 है।

3.5.8 वैधता –

अध्यापक प्रभावशीलता मापनी की वैधता हेतु अध्यापक प्रभावशीलता मापनी के सभी आयामों (Dimensions) का सहसम्बन्ध उसके सभी प्राप्तांक (Total Score) के साथ ज्ञात किया गया है।

3.5.9 अध्यापक समायोजन मापनी –

प्रस्तुत शोध में तृतीय आश्रित चर 'अध्यापक समायोजन' है। इसके मापन हेतु 'अध्यापक समायोजन मापनी' का निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गया। इस मापनी के निर्माण में शोधकर्ता द्वारा सर्वप्रथम आयाम (Dimansion) तय किये गये। इन आयामों के निर्धारण में अध्यापकों और विषय विशेषज्ञों से परामर्श किया गया। इस प्रकार अध्यापक समायोजन के कथनों की एक सूची तैयार की गयी। यह सूची प्रमुख शिक्षाशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, शिक्षक–प्रशिक्षक एवं प्राथमिक शिक्षा के प्रशासकों से साक्षात्कार करके 14 आयामों पर 68 कथनों की सूची तैयार की गयी।

3.5.10 कथनों का चयन –

अध्यापक प्रभावशीलता मापनी के 14 आयामों पर 68 कथनों का निर्माण करने के पश्चात् अध्ययन के लिए सम्बन्धित विशेषज्ञों को उनके सुझाव हेतु दिया गया। प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित इन सभी व्यक्तियों के आलोचना एवं टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए 12 कथनों को अस्वीकृत कर दिया गया।

3.5.11 अध्यापक प्रभावशीलता मापनी का प्रशासन–

प्राथमिक विद्यालयों से 'आकस्मिक विधि' से चुने गये 260 पुरूष एवं महिला अध्यापकों के समूह पर 56 कथनों वाली मापनी का प्रशासन किया गया। उत्तरदाताओं को यह जोर देकर बताया गया कि उसमें से किसी भी कथन को छोड़ना नहीं है एवं इन कथनों के अच्छे या बुरे की कोई बात नहीं है। उन्हें अपने व्यक्तिगत सहमति और असहमति के आधार पर प्रत्येक कथन का उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि उनके प्रत्युत्तरों को गोपनीय रखा जायेगा। इसमें यह भी बताया गया कि प्रश्नावली भरते समय, समय को भी ध्यान में रखे कि कितना समय भरते समय लग रहा है। किसी भी उत्तरदाता के पूर्ण प्राप्तांक जानने के लिए प्रत्येक कथन सम्बन्धी उसके प्राप्तांकों का कुल योग किया गया। इस मापनी में प्राप्तांकों का विस्तार 56 कथनों से अधिकतम् 280 तक था जो निम्नवत 56 और अधिकतम् 280 तक प्राप्तांकों का विस्तार था। यह अध्यापक समायोजन को निम्नतम तथा अधिकतम की ओर संकेत करते हैं। मापनी सम्बन्धी निर्देश मापनी के मुख्य पृष्ठ पर लिखे हुए है।

3.5.12 प्राप्तांकों का निर्धारण –

यह 'अध्यापक समायोजन मापनी' लिकर्ट के 5 बिन्दु मापनी पर आधारित है। इस प्रश्नावली में सकारत्मक एवं नकारात्मक प्रश्न है।

सकारात्मक कथनों में – यदि कथन है कि, 'अपने वरिष्ठ सहयोगी अध्यापकों से सामंजस्य पूर्ण व्यवहार करता हूँ' तो अंक वितरण निम्नलिखित है –

पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
5 अंक	4 अंक	3 अंक	2 अंक	1 अंक

नकारात्मक कथनों में – यदि कथन है कि, 'प्रस्तुत पाठ्य पुस्तकों' में चित्र एवं उदाहरण पर्याप्त नहीं है तो अंकों का वितरण निम्नलिखित है –

पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	5 अंक

इस प्रकार प्रत्येक कथन से सम्बन्धित प्राप्तांको का कुल योग अध्यापक के समायोजन को व्यक्त करता है। इस मापनी में प्राप्तांकों का विस्तार 56 से 280 तक प्रसारित है जो क्रमशः न्यूनतम अध्यापक समायोजन और अधिकतम् अध्यापक समायोजन की ओर संकेत करते हैं।

3.5.13 विश्वसनीयता –

किसी भी शोध उपकरण की सबसे बड़ी विशेषता उसकी विश्वसनीयता है। इस मापनी की विश्वसनीयता 'अर्द्ध–विच्छेद विधि' (Split-Half Method) से ज्ञात की गयी। 'अर्द्ध–विच्छेद विधि' कम्प्यूटर साफ्टवेयर IBM. SPSS. Statistics.Version 21 से ज्ञात की गयी है। जिसमें प्रथम भाग का 'क्रानबेक अल्फा' (Cronbach's Alpha) का मान .65 (28 कथनों) पर पाया गया है तथा द्वितीय भाग का 'क्रानबेक अल्फा' का मान .64 (28 कथनों) पर पाया गया है। इन दोनों प्रारूपों के बीच 'सहसम्बन्ध' (Correlation) .58 है एवं 'स्पीयर मेन ब्राउन इक्वल लेन्थ कोएफिसिएण्ट' (Spearman-Brown Equal Length coefficient) .73 है।

3.5.14 वैधता –

वैधता हेतु अध्यापक समायोजन मापनी के सभी आयामों (Dimensions) का सहसम्बन्ध उसके सभी प्राप्तांक (Total Score) के साथ ज्ञात किया गया है।

3.6 प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियेा –

आंकड़ों के संकलन के पश्चात् सांख्यिकीय का प्रमुख कार्य उनको व्यवस्था प्रदान करना होता है अथवा उनके जटिल रूप को सरल, स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाना होता है। उनमें निहित तथ्यों को क्रमबद्ध व्यवस्था प्रदान करना तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट करना होता है। प्रस्तुत शोध में अधोलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है–

1 विवरणात्मक सांख्यिकीय
   (अ) मध्यमान
   (ब) मानक विचलन
2 सहसम्बन्ध
   प्रोडक्ट मोमेन्ट सहसम्बन्ध गुणांक (मूल प्राप्तांक विधि)
3 अनुमानात्मक सांख्यिकीय (Inferential)
4 प्रसरण विश्लेषण (ANOVA-Analysis of Variance)

4.1 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

इन तीनों ही आश्रित चरों (अध्यापकों कार्य संतुष्टि, अध्यापक प्रभावशीलता एवं अध्यापक समायोजन) के 'प्रसरण विश्लेषण' (ANOVA) से यह स्पष्ट है कि वर्तमान अध्ययन के तीनों मुख्य चरों पर केवल समूह (बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी०) का प्रभाव पाया गया एवं यह भी पता चलता है कि कार्य संतुष्टि एवं समायोजन की तुलना में ज्यादा अच्छा है जबकि प्रभावशीलता विशिष्ट बी०टी०सी० अध्यापकों की तुलना में बी०टी०सी० अध्यापकों में ज्यादा पाया गया है।

इन तीनों ही आश्रित चरों पर लिंग एवं सन्दर्भ का कोई भी प्रभाव नहीं था। इसको ध्यान में रखते हुए आगे के प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) में केवल (बी०टी०सी०/विशिष्ट बी०टी०सी०) को लिया गया है और तीनों ही चारों के सभी आयामों के स्तर पर समूह के प्रभाव का अध्ययन किया गया है एवं इस हेतु तीनों आश्रित चरों के आयामों के स्तर पर तीन 'एक दिश प्रसरण विश्लेषण' (One way ANOVA) किया गया है।

प्रस्तुत शोध का प्रथम आश्रित चर अध्यापक कार्य संतुष्टि के 20 आयामों (Dimensions) में से केवल 6 आयामों पर ही समूह (बी०टी०सी०/विशिष्ट बी०टी०सी०) का प्रभाव सार्थक पाया गया है। अध्यापक कार्य संतुष्टि हेतु यहाँ 6 आयाम महत्वपूर्ण आयामों के रूप में उपस्थित हैं जिनका नाम इस प्रकार है– 1. वेतन एवं अतिरिक्त लाभ (Salary and Fringe Benifits) [$F(1,472) = 103.60$, $P < .01$]। 2. कार्य की परिस्थितियाँ (Working conditions) [$F(1,472) = 24.75$, $P < .05$] । 3. कार्य की अधिकता (Work load) [$F(1,472) = 102.67$, $P < .01$]। 4. उपलब्धियाँ (Achievement) [$F(1,472) =$

22.96, P < .05] । 5. पुस्तकालीय नीतियाँ एवं कार्यान्वयन (Library Policies and Parctices)। [F (1,472) = 35.20, P < .05] । 6. सुरक्षा (Security) [F (1,472) = 125.05, P < .01]।

इन 6 आयामों में विशिष्ट बी०टी०सी० का मध्यमान (Mean) बी०टी०सी० की तुलना में अधिक है जिनके मध्यमानों का वर्णन इस प्रकार है – इन 6 आयामों में प्रथम आयाम 'वेतन एवं अतिरिक्त लाभ' का बी०टी०सी० का 13.1417 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 14.0708 मध्यमान है। द्वितीय आयाम 'कार्य की परिस्थितियाँ' जिनमें बी०टी०सी० का 15.9292 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 16.3833 मध्यमान है। तृतीय आयाम 'कार्य की अधिकता' जिसमें बी०टी०सी० का 13.4458 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 14.3708 मध्यमान है। चतुर्थ आयाम 'उपलब्धि' का बी०टी०सी० का 15.9525 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 16.4000 मध्यमान है। पंचम आयाम 'पुस्तकालीय नीतियाँ एवं कार्यान्वयन' का बी०टी०सी० का 14.875 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 15.4167 मध्यमान है तथा छठवां आयाम 'सुरक्षा' है जिसका बी०टी०सी० का 13.8708 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 14.8917 मध्यमान है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि इन 6 आयामों में विशिष्ट बी०टी०सी० अध्यापकों के कार्य संतुष्टि बी०टी०सी० अध्यापकों की तुलना में ज्यादा है।

आयामों में बी०टी०सी० का मध्यमान (Mean) विशिष्ट बी०टी०सी० की तुलना में अधिक है। जिनके मध्यमानों का वर्णन इस प्रकार है – इन 6 आयामों में प्रथम आयाम 'अनुशासन' है जिसका बी०टी०सी० का 18.5750 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 18.2167 मध्यमान है। द्वितीय आयाम 'अभिप्रेरणा' का बी०टी०सी० का 17.9125 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 17.6083 मध्यमान है। तृतीय आयाम 'अध्यापक, छात्र सम्बन्ध' का बी०टी०सी० का 18.1708 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 17.8667 मध्यमान है। चतुर्थ आयाम 'अध्यापक, सहयोगी अध्यापक सम्बन्ध' का बी०टी०सी० का 17.5708 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 17.0208 मध्यमान है। पंचम आयाम 'अध्यापक, प्रधानाध्यापक सम्बन्ध' का बी०टी०सी० का 18.1625 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 17.7792 मध्यमान है। षष्ट्म आयाम 'अध्यापक, अभिभावक सम्बन्ध' का बी०टी०सी० का 17.6083 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 17.2625 मध्यमान है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि इन 6 आयामों में विशिष्ट बी०टी०सी० अध्यापकों की तुलना में अध्यापक प्रभावशीलता बी०टी०सी० अध्यापकों की ज्यादा है।

अध्ययन के तृतीय आश्रित चर अध्यापक समायोजन के 14 मूल आयाम (Dimensions) है। इन 14 मूल आयामों पर समूह का प्रभाव 'एक दिश प्रसरण' (One way ANOVA) के माध्यम से देखा गया जिसमें 7 आयामों पर समूह (बी०टी०सी०/विशिष्ट बी०टी०सी०) का प्रभाव सार्थक पाया गया है। अध्यापक समायोजन हेतु यहाँ 7 आयाम महत्वपूर्ण आयामों के रूप में उपस्थित है जिनका नाम इस प्रकार हैं – 1. शिक्षक विधियाँ [F (1,472) = 31.00, P < .01]। 2. शिक्षक सहायक सामग्री [F (1,472) = 143.00, P < .01]। 3. पाठ्यपुस्तक [F (1,472) = 51.35, P < .01]। 4. समय सारणी [F (1,472) = 24.30, P < .05]। 5. पर्यवेक्षक [F (1,472) = 64.53, P < .01]। 6. अनुशासन [F (1,472) = 78.40, P < .01] 7. पारिवारिक स्थिति [F (1,472) = 86.70, P < .01]।

7 आयामों में विशिष्ट बी०टी०सी० का माध्यमान बी०टी०सी० की तुलना में अधिक है। जिनके मध्यमानों का वर्णन इस प्रकार है। इन 7 आयामों में प्रथम आयाम 'शिक्षण विधियाँ' है जिसका बी०टी०सी० का 17.1250 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 16.6167 मध्यमान है। द्वितीय आयाम 'शिक्षण सहायक सामग्री' है जिसका बी०टी०सी० का 13.6250 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 14.7167 मध्यमान है। तृतीय आयाम 'पाठ्य पुस्तक' है जिसमें बी०टी०सी० का 14.3458 एवं बी०टी०सी० का 15.0000 मध्यमान है। चतुर्थ आयाम 'समय–सारणी' है जिसमें बी०टी०सी० का 15.2458 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 15. 6958 मध्यमान है। पंचम आयाम 'पर्यवेक्षक' है जिसका बी०टी०सी० का 13.9750 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 14.7083 मध्यमान है। षष्ट्म आयाम 'अनुशासन' है जिसका बी०टी०सी० का 14.9333 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 15.7417 मध्यमान है। सप्तम् आयाम 'पारिवारिक स्थित' है जिसका बी०टी०सी० का 14. 5500 एवं विशिष्ट बी०टी०सी० का 15.4000 मध्यमान है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि इन 7 आयामों में बी०टी०सी० अध्यापकों की तुलना में अध्यापक समायोजन विशिष्ट बी०टी०सी० अध्यापकों का ज्यादा है।

5.0 शोध परिणामों की व्याख्या, निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ

5.1 परिणामों की व्याख्या–

परिणामों की व्याख्या अधोलिखित है–

5.1.1– अध्यापक कार्य संतुष्टि के स्तर पर–

परिणामों के आधार पर यह पता चलता है कि 'प्रथम' शून्य परिकल्पना जो कि 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं है।' इसकी परिणामों के आधार पर पुष्टि नहीं हुई है। बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 समूह के बीच अध्यापक कार्य संतुष्टि के स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है।

इसी प्रकार 'द्वितीय' शून्य परिकल्पना 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के पुरूष एवं महिला अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं है।' एवं 'तृतीय' शून्य परिकल्पना 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में अन्तर नहीं है।' इसकी परिणामों के आधार पर पुष्टि हुई है। प्राप्त परिणामों से पता चलता है कि लिंग (महिला एवं पुरूष), सन्दर्भ (ग्रामीण एवं नगरीय) का कोई प्रभाव अध्यापक कार्य संतुष्टि पर नहीं पड़ा है।

5.1.2– अध्यापक प्रभावशीलता के स्तर पर–

परिणामों के आधार पर यह पता चलता है कि 'चौथी' शून्य परिकल्पना जो 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के प्रभावशीलता में अन्तर नहीं है।' इसकी परिणामों के आधार पर पुष्टि नहीं हुई है। अतः परिणाम यह बता रहे हैं कि बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के प्रभावशीलता में अन्तर है।

लेकिन 'पाँचवा' शून्य परिकल्पना जो कि 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के प्रभावशीलता में अन्तर नहीं है।' एवं 'छठवाँ' शून्य परिकल्पना जो कि 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के प्रभावशीलता में अन्तर नहीं है।' इसकी प्राप्त परिणामों के आधार पर पुष्टि हुई है। इन मध्यमानों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है जो यह इंगित करते हैं कि अध्यापक प्रभावशीलता पर लिंग (महिला एवं पुरूष), संदर्भ (ग्रामीण एवं नगरीय) का कोई प्रभाव नहीं है।

5.1.3– अध्यापक समायोजन के स्तर पर–

परिणामों के आधार पर यह पता चलता है कि 'सातवाँ' शून्य परिकल्पना जो 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के समायोजन में अन्तर नहीं है।' इसकी परिणामों के आधार पर पुष्टि नहीं हुई है। प्राप्त परिणाम यह बताते हैं कि बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के प्रभावशीलता में अन्तर पाया गया है।

लेकिन 'आठवाँ ' शून्य परिकल्पना जो कि 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के समायोजन में अन्तर नहीं है।' एवं 'नौवाँ' शून्य परिकल्पना जो कि 'बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के समायोजन में अन्तर नहीं है।' परिणाम यह बताते हैं कि मध्यमानों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शून्य परिकल्पना सही है। अर्थात् लिंग (महिला एवं पुरूष), संदर्भ (ग्रामीण एवं नगरीय) का प्रभाव अध्यापक समायोजन पर नहीं पड़ा है।

5.2– निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध 'गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर एकत्रित आंकड़े, सांख्यिकीय विश्लेषण एवं प्राप्त परिणामों की व्याख्या से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं–

1– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के समूह के बीच अध्यापक कार्य संतुष्टि के स्तर पर अन्तर पाया गया है।

2– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापको के बीच कार्य संतुष्टि के स्तर पर कोई भी अन्तर नहीं पाया गया है।

3– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के बीच कोई भी अन्तर नहीं पाया गया है।

4– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के अध्यापक प्रभावशीलता स्तर पर अन्तर पाया गया है।

5– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के बीच अध्यापक प्रभावशीलता स्तर पर कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

6– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के बीच अध्यापक प्रभावशीलता स्तर पर कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

7– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों के बीच अध्यापक समायोजन स्तर पर अध्यापकों के बीच अन्तर पाया गया है।

8– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष एवं महिला अध्यापकों के बीच अध्यापक समायोजन स्तर पर कोई भी अन्तर नहीं पाया गया है।

9– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों के बीच अध्यापक समायोजन स्तर पर कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष से यह परिणाम निकलता है कि–

1– बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों का प्रभाव अध्यापक कार्य संतुष्टि, अध्यापक प्रभावशीलता एवं अध्यापक समायोजन पर है।

2– अध्यापक कार्य संतुष्टि एवं अध्यापक समायोजन बी0टी0सी0 की तुलना में विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों में ज्यादा है। जबकि अध्यापक प्रभावशीलता विशिष्ट बी0टी0सी0 की तुलना में बी0टीसी0 में ज्यादा है।

3– लिंग (पुरूष एवं महिला) एवं संदर्भ (ग्रामीण एवं नगरीय) का प्रभाव (कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन) पर नहीं पड़ा है।

5.3– प्राप्त परिणामों के शैक्षिक निहितार्थ एवं उपयोगिता–

प्रस्तुत शोध 'गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन' है। शोध से प्राप्त परिणाम शैक्षिक शोध में लागू किया जा सकता है तथा विभिन्न कमियों को दूर करने का प्रयास उचित ढ़ंग से संभव हो सकता है तथा इसकी उपादेयता कई प्रकार से अभिप्रमाणित होती है।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्य को प्राप्त करने में सरकार ने विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों की नियुक्ति की। विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापक उच्च शिक्षा ग्रहण किये हैं और बी0टी0सी0 अध्यापक पारम्परिक प्रशिक्षण प्राप्त किये हैं। प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में बी0टी0सी0 अध्यापक सहायक हैं क्योंकि शोध से प्राप्त निष्कर्ष यह बताते हैं कि बी0टी0सी0 अध्यापकों का शिक्षण प्रभावशीलता उच्च स्तर का है और बालकों के व्यक्तित्व विकास में यह अध्यापक मददगार हैं।

निष्कर्षों के आधार पर प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ अधोलिखित हैं–

1– शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अध्यापकों एवं प्रशिक्षित अध्यापकों के लिए–

शोध के निष्कर्ष यह बताते हैं कि प्रशिक्षण और प्रयास से अध्यापकों में कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन के संदर्भ में दृष्टि दिया जा सकता है। अध्यापकों को नौकरी के पहले या नौकरी के दौरान यह प्रशिक्षण अध्यापकों को लाभ पहुँचायेगी।

2– शिक्षण–प्रशिक्षण कराने वाले संस्थाओं के लिए–

प्रशिक्षण संस्थायें अध्यापक का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिव्यक्ति को ध्यान में रखते हुए उनका प्रवेश लें। प्रशिक्षण संस्थायें कक्षाध्यापकों को कार्य संतुष्टि, प्रभावशाली शिक्षण एवं अध्यापन समायोजन के लिए प्रशिक्षण दे सकती हैं, जो शिक्षण कार्य करते समय एक अध्यापक के लिए अच्छा होगा।

3– पर्यवेक्षक एवं प्रशासन के लिए–

यह शोध पर्यवेक्षकों एवं प्रशासन के लिए बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बीटी0सी0 अध्यापकों के उनके प्रमोशन, वेतन–भत्ता और अन्य भत्ता, स्कूल के बातावरण में सुधार कर, पुस्तकालय और अन्य ऐसे व्यवस्था को सुधार कर अध्यापकों के कार्य संतुष्टि प्रभावशीलता एवं समायोजन को कैसे अच्छा किया जाय, पर्यवेक्षकों एवं प्रशासन को इसके लिए सहायता मिलेगी।

4– निर्देशन एवं परामर्श के लिए–

एक निर्देशनकर्ता को बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के असंतोष एवं कुसमायोजन की समस्या के लिए इस शोध के द्वारा उनको विश्लेषण करने का अवसर मिलेगा। एक परामर्शकर्ता को इस शोध के द्वारा प्राथमिक अध्यापकों के समस्या के विश्लेषण के बाद उनमें कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन को कैसे बढ़ाया जाय, का परामर्श देने में सहायता मिलेगी।

5– नीति निर्माताओं के लिए–

इस शोध का परिणाम नीति निर्माताओं को योजना बनाते समय बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के बीच दूरी को समाप्त करने तथा इन दोनों के द्वारा स्वास्थ्य, विद्यालयी वातावरण तथा सामंजस्य कैसे बनाया जाय को नीति निर्धारण करते समय सहायता मिलेगी।

6– उपचार के उद्देश्य से–

प्रधानाचार्य को अध्यापकों के व्यवहार का अवलोकन करते रहने तथा उनमें कैसे शिक्षण के प्रति उत्साह एवं उनमें कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता तथा समायोजन बढ़े उनको इसके बारे में सोचते रहना चाहिए। यह उनके द्वारा कार्य करने के लिए सहायता प्रदान करेगा।

5.4– भावी शोध हेतु सुझावः–

प्रस्तुत शोध 'गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर अध्ययन किया गया। इस शोध में गोरखपुर मण्डल के चार जिलों (गोरखपुर, महाराजगंज, देवरिया तथा कुशीनगर) पर अध्ययन किया गया है। यद्यपि यह शोध कार्य प्रदेश स्तर पर होना चाहिए किन्तु सीमित साधनों, सीमित समय में शोधकर्ता एक बड़े स्तर पर शोध करने में असमर्थ था। शोध कार्य करते समय कुछ समस्यायें सामने आयीं। अतः उन समस्याओं को दृष्टि में रखते हुए कुछ उपयोगी तथा सार्थक शोध कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन पर करने के लिए कुछ सुझाव अधोलिखित हैं–

1– प्रस्तुत शोध कार्य गोरखपुर मण्डल पर किया गया है। बल्कि यह शोध कार्य प्रदेश स्तर पर बड़े जनसंख्या पर करने में मदद करेगी।

2– प्रस्तुत शोध 'गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालय के बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 अध्यापकों के कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन पर किया गया। अध्यापकों के कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन पर शोध कार्य माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय/महाविद्यालयों स्तर के अध्यापकों के अध्ययन करने में मदद करेगी।

3– यह शोध शिक्षा के विभिन्न स्तर में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा एवं सरकारी तथा निजी विद्यालयों के अध्यापकों के कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन करने सहायता प्रदान करेगी।

4– प्रस्तुत शोध शिक्षा के विभिन्न स्तरों के अध्यापकों में कार्य संतुष्टि एवं आकांक्षा स्तर पर शोध कार्य करने में सहायता प्रदान करेगी।

5– प्रस्तुत शोध अकादमिक अध्यापकों तथा व्यावसायिक अध्यापकों के कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने में सहायता प्रदान करेगी।

6– अध्यापक प्रभावशीलता और कार्य संतुष्टि के सम्बन्ध तथा उनकी अभिवृति, वैवाहिक स्थिति, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के सम्बन्ध में अध्ययन किया जा सकता है।

7– ऐसे विशिष्ट कारकों का पता लगाया जा सकता है जो अध्यापक कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन को बढ़ावा देते हैं।

8– अध्यापक प्रभावशीलता एवं कार्य संतुष्टि का प्रधानाचार्यों एवं प्रबन्धकों के व्यवहार के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।

9– यू0पी0 बोर्ड के अध्यापकों तथा केन्द्रीय विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

10– अध्यापकों के भावात्मक बुद्धि का उनकी कार्य संतुष्टि, अध्यापक प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची :

1. गैरेट, ई0 हेनरी (1989) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नोयडा : कल्याणी पब्लिशर्स
2. कौल, लोकेश (2010) शैक्षिक शोध की कार्य प्रणाली, नोयडा : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0
3. गुप्ता, एस0 पी0 (2006) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन
4. गुप्ता, एस0 पी0 (2007) सांख्यिकी विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन
5. भटनागर, आर0 पी0 (2007) शिक्षा शोध, मेरठ : लायल बुक डिपो
6. भार्गव, महेश (2010) मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा : एच0 पी0 भार्गव बुक हाउस
7. Lazerus, R.S. (1961) Adjustment and Personality, New York: Mc Graw Hill Book Company.
8. Best, John W. and Kahan, J.V. (1986) Research in Education (Fifteen Ed.) New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
9. Flanders, N.A. and Simon (1969) Teaching Effectiveness: A Review of Research 1960-66, in Encyclopedia of Educational Research, R.L. Ebet (Ed.), Chicago: Rand Mc Nally.